International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्राचीन भारत में सुरापान

डॉ चंचल गर्ग,

सहायक आचार्य, इतिहास, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

शोध सारांश

भोजन उत्पादन ने मानव जीवन मे अनेक मादक द्रव्य भी दे दिए। शायद किण्वित भोजन ने उसके जीवन में सुरा का प्रचलन कर दिया। विविध मसाले, फल, फूल, अनाज, पेड़ों की छाल, पत्तियों, जड़, घासों, के संयोजन से विविध प्रकार की सुरा का निर्माण किया जाने लगा। सामान्यजन में इसका बहुतायत से प्रचलन था । उत्सवों, वैवाहिक अवसरों सभा गोष्ठियों में इसका पान सामान्य था। जहां स्त्री पुरुष दोनों इसका आनंद लेते थे। लेकिन अति सर्वत्र वर्ज्यते की भांति इसका अधिक प्रयोग निषेध किया गया था। सुरा विक्रय हेतु स्थान निर्धारित थे। कौटिल्य ने स्पष्ट कहा था कि दुकानदार ध्यान रखे कि किसको आधा सेर और किसको पाव सेर सुरा देनी है। सुरा सेवन करने वाले व्यक्ति के सामान की सुरक्षा भी दुकानदार का कर्तव्य होता था। इसके पान से उत्पन्न दोषों के कारण इसका सेवन प्रतिबंधित किया गया था। स्त्रियों और ब्राह्मणों को सख्त निर्देश थे कि इसका सेवन ना करे। अगर भूलवश हो भी जाये तो प्रायश्चित विधान था।

संकेताक्षर सुरा, आसव, पानभूमि, मदिरालय, सीधू, मरैया।

संस्कृति की प्रारंभ से भोजन के उत्पादन ने मनुष्य को पेय बनाने का भी ज्ञान दे दिया, जिसमें विविध प्रयोग करके मानव ने कुछ मादक पेय पदार्थ बनाना प्रारंभ कर दिया ,जिससे उसे मद उत्पन्न होता था, इसे सामान्यतया सुरा के नाम से जाना गया। ऐसा प्रतीत होता है कि औषधीय गुण प्रधानतावश इसका प्रयोग लोगों में हुआ लेकिन कालांतर में इसका प्रयोग विविध नशों के रूप में किया जाने लगा। सुश्रुत[1] का मानना था कि वही मदिरा पीनी चाहिए जो सुगंधित पुरानी और सरस हो, जिससे मन उद्दीपित हो जाए, कफ और वात के विकार दूर हो जाएं तथा जिससे सुरुचि और प्रसन्नता उत्पन्न हो।

सुरा का अर्थ सुश्रुत के अनुसार संज्ञाहारी था[2]। आर्य और अनार्य परंपरा के अनुसार जो असुरों का पेय था, वह सुरा था। समुद्र मंथन के समय देवताओं को अमृत और असुरों को सुरा भेंट की गई थी। वस्तुतः सुरापन के पश्चात उत्पन्न दोषों के कारण इसे असुरों से तादात्म्य किया होगा।

प्राचीन साहित्य से ज्ञात होता है कि मकई के दानों,फल, जड़, तना, फूल, पत्ती,छाल विविध पत्तों के रस से गुड़, शहद और इन सभी के संयोजन से अनेक प्रकार की सुरा बनाई जाती थी। लगभग 84 नशीले पेय अनाज, शहद, गन्ने का रस, ताड़ और नारियल के रसों से, फलों जैसे–अंगूर, आम, खजूर, बेर, फूलों जैसे–महुआ, कदम्ब आदि के रस से बनाए जाते थे। इन्हें विविध नामों से पुकारा जाता था। उत्तरवैदिक काल मे किण्वित पेयों कीलाला (अनाज से बनाई गई), मसारा (चावल के मांड या काँजी से बनाई गई) नाम मिलता है। बाल्मीकिरामायण में 4 पेय जबकि कौटिल्य अर्थशास्त्र में ऐसे 12 किण्वित पेयों के नाम हैं। कालिदास ने हल्की, तेज एवम रंग, प्रकार आदि के आधार पर सुरा के लिए मद्य, आसव, वारुणी, मधु कादम्बरी, शीधु, मदिरा शब्दों का प्रयोग किया है। कालिदास ने सुरा के लिए चार नामों का विशेषतः प्रयोग किया है–

(अ)– नारिकेलासव[3]– नारियल से बनाई गई,

(ब)– पुष्पासव[4]– फूलों के पराग स बनाई गई,

(स)– अंगूर से बनाई गई शराब[5]

(द)– सीधू[6]– गन्ने के रस से बनाई गई।

प्राचीन भारतीय साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि

सुरा को उसके बनाने के तरीके के आधार पर चार भागों में बंटा जा सकता है–

मदिरा– गुड़ और शहद से बनाई गई

आसव– फूलों, तनों, जड़ों के रस से बनाई गई

शीधू– गन्ने के रस से बनाई गई

चरु– निम्न कोटि की मदिरा।

इसी प्रकार धीरेन्द्र कुमार बोस अपनी पुस्तक वाइन इन इंडिया में तीन प्रकार की शराब मुख्यतया बताई है[7]–

गौरी– गुड़ या चीनी से बनी हुई

माधवी–फूलों के रस और शहद से बनी हुई

पैस्ते–अनाज से बनी हुयी

इनमे प्रथम दो वाइन की श्रेणी में और अंतिम बीयर की श्रेणी में मानी जा सकती है। वस्तुतः प्राचीन भारत मे विभिन्न अनाजों, फलों, फूलों और मसालों के संयोजन से बनी हुई निम्न प्रकार की सुरा पान किया जाता था[8]–

1ण अक्सीकी सीधू– अक्श फल से तैयार
2ण अरिष्टा–औषधियों का एक मिश्रण जिसमे ठोस तत्त्वों की प्रधानता रहती है
3ण आसव–कपित्था का अर्क, कुछ मसालों के साथ गन्ने का रस और शहद मिलाया जाता था।
4ण अवदातिका–पाणिनि द्वारा वर्णित शराब
5ण बक्कासा–ठोस तत्त्वों के तरल भाग से बनी
6ण बिजोत्तरा–कौटिल्य द्वारा वर्णित शराब
7ण धातक्यबिसुता–धातकी फूलों से बनी शराब
8ण दिव्या–कदम्ब की छाल से तैयार किया गया नशीला पदार्थ
9ण गौदी–गूदे से तैयार नशीला पदार्थ
10ण हरबराका–अफगानिस्तान से आयातित शराब
11ण जगाला–सुरा का अवशेष
12ण जाति–जाति फूलों से बना नशीला पेय
13ण कादम्बरी–कदम्ब के फूलों से आसुत
14ण कालिका–पाणिनि द्वारा वर्णित एक शराब
15ण कपिसायिनी–अफगानिस्तान से आयातित एक शराब
16ण कासय–चावल के भोजन और फूलों का काढ़ा
17ण कौला–बेर फल से तैयार शराब
18ण खरजुरा–खजूर से तैयार शराब
19ण क़िलाला–अनाज से तैयार एक शराब
20ण कोबाला–भुने हुए जौ के आटे से तैयार किया गया
21ण कर्तासूरा–किण्वित सुरा
22ण माधवी–शहद से तैयार सुरा
23ण मदबाबी–माधका फूल से तैयार शराब
24ण मदबासव–मधुका फूल से तैयार शराब
25ण मदिरा–सुरा की क्रीम
26ण मद्य–सभी प्रकार की तेज शराब
27ण मरैया–मेसारिगी की छाल चीनी या गुड़ के साथ मिलाकर मसालेदार शराब (कुलीन वर्ग की प्रिय शराब थी।)
28ण मार्दविका–अंगूरों की शराब कौटिल्य ने उसे मधु कहा है
29ण मसारा–चावल को मसलकर और कुछ मसालों से बने मिश्रण को किण्वित करके बनाई शराब
30ण मेदाका–चावल, खमीर, केक, शहद और कुछ मसालों से तैयार सुरा
31ण नारिकेलासव–नारियल के रस से तैयार सुरा
32ण पैस्ती–चावल या जौ के भोजन से तैयार सुरा
33ण पेरिस्रुता–फूलों या कुछ निश्चित घासों को किण्वित करके बनाया गया नशीला पेय
34ण पबालासाव–खजूर जैसे फल से तैयार आसव
35ण प्रसन्ना–चावल के आटे और कुछ मसालों से तैयार किया गया इसमें कुछ तैलीय अंश रहते थे इसे सुरा की क्रीम भी कहते थे
36ण पुष्पासव–मधुका जैसे फूलों से तैयार आसव
37ण रसोत्तरा–गन्ने के रस से तैयार
38ण सबकारासुरा–आमफल के रस से तैयार
39ण संबारिकी–मसालों की प्रधानता वाली शराब
40ण सरकारासव या सरकारासीधु–लाल चीनी से तैयार आसव
41ण सतायु–एक तेज नशीला पदार्थ जो सौ बार पतला करने पर भी अपना असली रूप नही खोता
42ण सिद्बू–गन्ने के रस और धातकी फूलों से तैयार
43ण सुरा–साधारणतया जौ या चावल के आटे से तैयार कभी कभी घास की मिधिलिका किस्म का भी प्रयोग किया जाता था
44ण सुरासव–एक आसव जिसमे पानी की जगह सुरा का प्रयोग किया जाता था
45ण स्वेतसुरा–प्रसन्ना प्रकार में कुछ मसालों का प्रयोग कर बनाई जाती थी

46ण तालक्का–ताड के फल से तैयार नशीला पदार्थ
47ण टांका–कपित्था के फल से तैयार
48ण वारुणी–ताड़ के फल और खजूर के रस को किण्वित करके बनाई गई तेज शराब इसके पीते ही बेहोशी आ जाती थी

शराब मिलने का स्थान या दुकानें

प्राचीन भारत में सभी को शराब बनाने की अनुमति नहीं थी। कभी–कभी उत्सवों के अवसर पर इसे सामान्य जन अपने घरों में बना सकते थे ,लेकिन सुरापन का प्रचलन यह दर्शाता है, कि शराब की बिक्री के लिए दुकानें बनी हुई थी इन्हें मधुशाला या मदिरालय कहा जाता था। अर्थशास्त्र के सुराध्यक्ष अध्याय[9] में उल्लेख है कि शराब की दुकान नगर पालिका के निरीक्षण में रहती थी कुछ विशेष स्थान पर शराब की दुकानों के लिए प्रतिबंध था। शराब की दुकान एक साथ रहती थी, इनके लिए निर्देश था कि यह गांव के बाहर ना हो। उन पर निरीक्षक नियुक्त किया जाता था। शराब क्रय करने वाला व्यक्ति सुरा दुकान से ले जा सकता था और अंदर बैठकर भी पी सकता था। इन दुकानों में कई कमरे होते थे, जिनमें अलग–अलग बिस्तर और बैठने की व्यवस्था होती थी। शराब पीने की कमरों में अलग–अलग मौसमों के लिए उपर्युक्त सुगंध, फूलों की माला, पानी और अन्य आरामदायक चीज होती थी। इसका अनुमान हम आज के कैफे की भांति लगा सकते हैं। समयमातृका[10] में तक्षक यात्रा के उत्सव में चलते–फिरते खोचें में कला नमक स्त्री द्वारा मदिरा बेचने का उल्लेख मिलता है। उत्सवों के अवसर पर या सभा के रूप में सामूहिक मधुपान का आयोजन भी होता था। समृद्धशाली लोग अपने सहचरों के साथ पानभूमि या आपानक (सामूहिक मधुपान स्थल) में एकत्र होकर विविध प्रकार से मनोरंजन करते हुए सुरापान करते थे। किसी–किसी पान भूमि में पीने के लिए बहुमूल्य पात्र और स्वर्ण–रजत के सुराघट होते थे, जिनमें सुगंधित सुरायें रखी होती थी। शराब पीने के पात्र स्फटिक पत्थर के बने होते थे। उत्सवों के अवसर पर पानभूमि विशेष रूप से सजाई जाती थी। अनेक युवतियां मदिरा भरे कलश लिए हुए खड़ी रहती थी। राजाओं के लिए विशेष प्रकार की मधुशाला बनाई जाती थी। स्त्री पुरुष यहां एक साथ मदिरापान करते थे। कुछ लोग इन मधुशालाओं में सपत्नी जाया करते थे। कतिपय ऐसे उत्सव भी इस युग में मनाये जाते थे जहां सामूहिक सुरापान होता था, जैसे सुरानक्षत्र (सुरानमखत) कहलाता था ,जिसमें बहुत से लोग एक साथ यथेष्ट सुरापान करते थे।

प्रचलन

भारतीय संस्कृति में प्रारंभ से ही मादक पेय विद्यमान रहे। ऋगवैदिक काल में सोम का उल्लेख उसे सुरा से जोड़ता है, लेकिन सोम को देवता मानना, देवताओं द्वारा ग्रहण करना, देवताओं को अर्पित करना, उसे सुरा से तादात्म्य को गलत ठहराता है। ऋग्वेद में अन्यत्र सुरा की निंदा की गई है, जो यह दर्शाता है कि सोम और सुरा सर्वथा भिन्न पेय थे। रामायण काल में आर्य और अनार्य दोनों के ही सुरापान उल्लेख मिलते हैं। समुद्र मंथन के समय वरुण की पुत्री वारुणी (सुरा) को अदिति के पुत्र आदित्यों (देवताओं) ने अपनाया था[11]। अयोध्या कांड में वर्णन है कि राम द्वारा सीता को मरैया (प्राकृतिक चीनी को फलों और फूलों के साथ किण्वित करके बनाई गई शराब) भेंट किया गया था[12]। बाद में जब अयोध्या से 14 वर्षों का वनवास मिला तो आशीर्वाद में हाथ जोड़कर सीता गंगा माता को कहती है, देवी प्रसन्न हो जब हम वापस आएंगे तो आपको चावल के साथ पकाया मांस के साथ 1000 बर्तन मादक पेय अर्पित करेंगे[13] ।सुग्रीव को भी अन्यत्र लक्ष्मण नशे में मदमस्त पाते हैं[14]। इसी प्रकार महाभारत में अनेक उल्लेख सुरापान प्रचलन को दर्शाते हैं। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर शराब के समुद्र, मक्खन की झील और चावल के पहाड़ उपस्थित थे[15]। अभिमन्यु के विवाह में सुरा का काफी इंतजाम था[16]। आचार्य शुक्राचार्य सुरापान के अभ्यस्त थे। असुरों ने उनके शिष्य कच (बृहस्पति के पुत्र) को जलाकर उसकी भस्म शुक्राचार्य की सुरा में मिला दी थी। इसी के बाद शुक्राचार्य ने यह नियम बनाया था कि जो भी ब्राह्मण सुरापान करेगा वह इस लोक और परलोक में भ्रष्ट कहा जाएगा[17]। उद्योग पर्व में एक स्थान पर कृष्ण व अर्जुन दोनों शराब पीकर मदहोश दृष्टव्य होते हैं। एक स्थान पर धृतराष्ट्र और संजय का वार्तालाप उन्हें सुरापान की मदहोशी में दर्शाता है क्योंकि उनकी बातें कर्कश और अहंकारसूचक थी[18]। चरक[19] शराब के बारे में कहते है की मन और शरीर को शक्ति देने वाली, अनिद्रा, दुख और थकान को दूर करने वाली भूख, खुशी और पाचन को बढ़ाने वाली होती है। यदि दवाई की तरह इसे लिया जाए तो यह अमृत है। अतः इसका प्रयोग शौर्य वृद्धि के लिए भी किया जाता था। द्रोणपर्व में उल्लेख है कि युद्ध प्रस्थान के समय भीम ने कैरातक मधु का पान कर अपने अंदर द्विगुणित बल महसूस किया[20]। युद्ध के समय उत्साह वृद्धि के लिए भी मद्यपान किया जाता था। रघु की सेना के थक जाने पर मदिरापान का उल्लेख कालिदास ने किया है[21]। अभिमन्यु के विवाह अवसर पर सूरा का इंतजाम दर्शाता है कि वैवाहिक अवसर, उत्सवों में सुरापान सामान्य माना जाता था। सामान्यतया स्त्रियाँ भी सुरापान करती थी। आदिपर्व मैं उल्लेख है कि जलक्रीड़ा के लिए जब अर्जुन और कृष्ण यमुनातीर पर गए तो उनके साथ द्रौपदी, सुभद्रा आदि कुलवधुएँ भी साथ गई। वहां कोई खुशी से नृत्य कर रही थी, कोई प्रहसन तो कोई सुरापान कर रही थी[22]। मत्स्यराज (विराटनगर) की महिषी सुदेष्णा प्यास शमन के लिए सुरापान करती थी, इसीलिए उसने द्रौपदी को कीचकालय शराब लेने भेजा था[23]।

मौर्य काल में सुरा का प्रचलन अर्थशास्त्र के सुराध्यक्ष अध्याय से लगाया जा सकता है कि सुरा विक्रय संबंधी निर्देश देने की आवश्यकता, इसके सामान्य जन में प्रचलन के कारण रही होगी। इसी प्रकार मनु ने भी सुरापान संबंधी प्रतिबंध लगाते हुए ब्राह्मण के लिए प्रायश्चित की व्यवस्था की है, जो इसकी चलन को दर्शाता है। द्वितीय शताब्दी ईस्वी प्रणीत शूद्रक के मृच्छकटिक में बर्फ वाली मदिरा पीने का उल्लेख है ,कि वेश्यानुरागी बर्फ में मिली मदिरा वेश्याओं को भेंट करते थे[24]। इसी में अन्यत्र विदूषक बसंतसेना की माता को देखकर

परिहास के साथ कहता है, कि सीधु, सुरा और आसव इन तीनों प्रकार की मद्यपान से मतवाली बसंतसेना की माता इस प्रकार स्थूलकाय हो गई है कि यदि यहां उनकी मृत्यु हो जाए तो हजारों श्रृंगालों का भोजनोत्सव हो जाए[25]। किन्तु मृच्छकटिक में कहीं भी उच्च वर्ग के लिए मद्यपान की चर्चा नहीं मिलती। कालिदास ने भी रति प्रसंग में सुरा के महत्व को स्वीकारते हुए इसे विभिन्न नाम से पुकारा है ,यथा अनंगप्रदीपनम, कामरतिप्रबोधक, मदनीयमुत्तमम, स्मरणसखम आदि। मधुपान से स्त्रियों की रमणीयता बढ़ जाती है ऐसा विश्वास था[26]। स्त्रियां अपने मुख को सुवाषित करने के लिए मधुपान करती थी,[27] क्योंकि सुरा को सुवाषित करने के लिए फूलों का अर्क भी मिलाया जाता था। पुरुष शक्ति शैथिल्य हो जाने पर मद्यपान करते थे, इस पीते ही चैतन्य आ जाता था। पुरुषों के साथ स्त्रियां भी मद्यपान करती थी। मालविकाग्निमित्रम में अग्निमित्र की रानियां में इरावती सुरा के नशे में देखी जाती थी[28]। अज की रानी इंदुमती भी मद्यपान करती थी[29]। अभिज्ञान शाकुंतलम में नागरिक और उसके नगररक्षकों के मद्यपान का उल्लेख मिलता है[30]। हर्षवर्धन की समय भी मद्यपान का प्रचलन था। हर्षवर्धन ने अपनी नाटिका रत्नावली में उल्लेख किया है, कि शराब के नशे में चूर शेखरक नामक विट मदिरापात्र कंधे पर रखे हुए अपने भूत के साथ महाभोज में प्रवेश करता है[31]। हर्षवर्धन के समय आये चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि जातिगत आधारित मद्यपान का प्रचलन भारत में था। क्षत्रिय अंगूर और ईख की मदिरा पीते हैं, वैश्य चुआई हुई सुरा पीते थे, बौद्धभिक्षु और ब्राह्मण गन्ने तथा अंगूर का रस पीते थे[32]। बाणभट्ट ने हर्ष जन्मोत्सव का उल्लेख करते हुए लिखा है कि मद्य के परनालों से रनिवास में गमक भर गई अर्थात प्रचुर मात्रा में मद्य उपलब्ध थी[33]। क्षेमेन्द्र कथासाहित्य में वेश्याओं के सुरापान का उल्लेख प्रायः मिलता है। वेश्याओं द्वारा ब्रह्मचारियों और तपस्वियों को भी मदिरा पिला दी जाती थी। प्रेमिकाएं अपने प्रेमियों के साथ मदिरापान करती थी। कथासरित्सागर मद्यपान को भोजन का अभिन्न अंग बताता है। मदिरापान के अनेक उल्लेख इसमें मिलते हैं। यथा राजा उदयन सुखपूर्वक मदिरापान कर रात्रि व्यतीत करते हैं[34]। राजा नरवाहनदत्त स्नानादि कर मदिरापान करते हैं[35]। युद्ध में घायल मंत्री को मदिरापान कराया जाता है[36]। प्रमुख मंत्रियों एवं पत्नियों के साथ बैठकर मद्यपान करना राजाओं का प्रमुख विलास था। राजा धर्मराज अपनी पत्नी द्वारा पीकर छोड़े हुए मद्य को पीता है[37]। मनोरंजन के लिए पानगोष्ठियों का आयोजन किया जाता था ।

सुरापान निंदा

मदिरा पान से उत्पन्न अवगुण अर्थात असत्प्रवृत्तियों को उत्तेजना मिलने के कारण इसकी प्राचीन समय में निंदा की गई है। ऋग्वेद में इसे मांस व जुआ के सामान बुरा बताया गया है[38]। उत्तरवैदिक साहित्य में कहा गया है की सुरा असत, अंधकार और कार्यष्य है[39]। सुरापान के कारण प्रमाद होता है, जो पाप है, इसे पीने से कुटुंब के लोगों में आपस में झगड़ा होता है । छान्दोग्य उपनिषद[40] में इसे गर्वान्वित कहा है यदि किसी राजा के राज्य में एक भी सुरापायी नहीं होता था। महाकाव्य युग में सुरा का प्रचलन होते हुए भी सिद्धांत रूप में इसका निषेध किया गया है। महाभारत में उल्लेख है कि मधु, मांस और मद्य का परित्याग करने वाला सभी कठिनाइयों को पार कर जाता है। महाकाव्ययुग में माना जाता था कि धर्म और अर्थ की सिद्धि के लिए सुरापन हानिकारक है। इसके सेवन से धर्म, अर्थ, काम नष्ट होते हैं। सुरापायी ब्राह्मण को धिक्कारा जाता था। आपस्तम्ब और गौतम धर्मसूत्रों में ब्राह्मणों के लिए सुरा निषेध किया गया है। बौद्ध साहित्य में भिक्षुओं के लिए सुरापान निषेध बताया गया है। जातक कथा साहित्य में ऐसे उल्लेख मिलते हैं जब व्यक्ति द्वारा सुरापान कर प्रमादवश पाप कर्म किए जाते थे। यथा[41] बनारस का राजा मद्यपान कर प्रतिदिन मांस भक्ष्य करता था, एक दिन मांस न मिलने पर सुरापान से प्रमत्त होकर अपनी गोद में खेलते हुए पुत्र की गर्दन मरोड़ दी और उसी का पका मांस खाया। इसी प्रकार किसी सेठ के पुत्र ने सुरापान कर नृत्य गीत आदि में मस्त होकर अपनी 40 करोड़ की संपत्ति गवाँ दी और सभी इच्छाएं पूरा करने वाला घड़ा भी प्रमादवश तोड़ दिया और निर्धन हो गया। मद्यपान करने वाली एक स्त्री ने सुरा खरीदने के लिए एक बालक को उसके आभूषण लेने की इच्छा से मार कर जमीन में गाढ़ दिया। इस तरह के उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि सुरापान से उत्पन्न अपवित्रता, अनिद्रा, असत्यता आदि अवगुणों के कारण इस निंदनीय माना जाता था। धर्मशास्त्रों में सुरापान अथवा सुरापायी की निंदा, बहिष्कार, प्रायश्चित दर्शाता है कि सुरापान समाज में प्रचलित होते हुए भी सम्माननीय दृष्टि से नहीं देखा जाता था। उत्सव आदि अवसरों पर ही सुरापान की छूट होती थी अन्यथा उच्च वर्ग व ब्राह्मण के लिए इसका सेवन निषेध था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 74.8 सुश्रुतसंहिता अनु0 अत्रिदेव, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1960
2. 74.11 उपरोक्त
3. 4.42 रघुवंश , चतुर्वेदी सीताराम , कालिदास ग्रंथावली, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, संस्कृत भवन, नया हैदराबाद, लखनऊ ष0स0 2063 सं, 3.38 कुमारसंभव , पूर्ववर्णित
4. 4.12, 5.5, ऋतुसंहार चतुर्वेदी सीताराम, पूर्ववर्णित
5. 4.65 रघुवंश चतुर्वेदी सीताराम पूर्ववर्णित
6. 16.52, 19.46 रघुवंश पूर्ववर्णित
7. पृ0 34 बोस धीरेन्द्र कुमार , वाइन इन इंडिया के0एम0 कन्नूर एन्ड को0 लिमिटिड, लंदन लाइब्रेरी एन्ड प्रेस ,130, बो बाजार कलकत्ता, 1922

8. उद्धृत पृ0 297–299, ओमप्रकाश, फूड एन्ड ड्रिंक्स इन एनशिएंट इंडिया, मुंशीराम मनोहरलाल ओरिएंटल बुकसेलर और पब्लिशर्स , नई सड़क दिल्ली प्र0 सं0 1961
9. पृ0 107, कौटिल्य अर्थशास्त्र , अनु0 श्रीयुत प्राणनाथ विद्यालंकार, मोतीलाल बनारसीदास, पंजाब संस्कृत पुस्तकालय, सेदमिट्ठा बाजार, लाहौर 1903
10. 2.8.85 समयमातृका, व्या0 त्रिपाठी रमाशंकर, चौखम्बा विद्या भवन , वाराणसी, 1967
11. 1.22–24 युद्धकाण्ड, श्रीमदबाल्मीकीय रामायण , गीता प्रेस गोरखपुर?
12. 52, अयोध्याकाण्ड, पूर्ववर्णित
13. 89 अयोध्या काण्ड पूर्ववर्णित
14. 33 किष्किन्धा काण्ड पूर्ववर्णित
15. 89 अश्वमेध पर्व महाभारत श्रीवेदव्यास प्रणीत , गीता प्रेस गोरखपुर
16. 72.28 विराटपर्व महाभारत पूर्ववर्णित
17. 76.67, आदिपर्व पूर्ववर्णित
18. 49.5 द्रोणपर्व पूर्ववर्णित
19. उद्धृत पृ0 36 बोस धीरेन्द्र कुमार, पूर्ववर्णित
20. 125.13–14 द्रोणपर्व, पूर्ववर्णित
21. 4.65, 4.42 रघुवंश पूर्ववर्णित
22. 76.67आदिपर्व पूर्ववर्णित
23. 16.4 विराटपर्व पूर्ववर्णित
24. 240 चतुर्थ अंक, मृच्छकटिक, व्या0 त्रिपाठी जयशंकर, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी 2002
25. 4.29 अष्टम अंकमृच्छकटिक पूर्ववर्णित
26. पृ0 159 वर्मा गायत्री , कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन संस्कृति , हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी प्र0 सं0 1963
27. 8.78 कुमारसंभव पूर्ववर्णित, पृ0 301 अंक 3 मालविकाग्निमित्रं पूर्ववर्णित।
28. 49 अंक 3 मालविकाग्निमित्रं पूर्ववर्णित
29. 8.68 रघुवंश पूर्ववर्णित
30. पृ0 188 अभिज्ञानशाकुंतलम पूर्ववर्णित
31. पृ0 68 हर्ष, गंगल बी.डी. अनु0 सुमंगल प्रकाश, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत 1968
32. उद्धृत पृ0 810 उपाध्याय रामजी, प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, देवभारती प्रकाशन,भारतनगर ,इलाहाबाद प्र0 सं0 1936
33. पृ0 67 अग्रवाल वासुदेव, हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन , बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना, 1964
34. 3.4.27 सोमदेव विरचित कथासरित्सागर , अनु0 सारस्वत केदारनाथ शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना , 1960
35. 7.9.63, उपरोक्त
36. 12.5.10, उपरोक्त
37. 12.18.10, उपरोक्त
38. 7.86.6, ऋग्वेद, शर्मा गंगासहाय, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली,2016
39. 5.1.4.28 शतपथ ब्राह्मण, उपाध्याय गंगाप्रसाद, प्राचीनवैज्ञानिकाध्ययन अनुसंधान संस्थानम नई दिल्ली 1967
40. 5.11.5 छान्दोग्य उपनिषद गीता प्रेस गोरखपुर आठवाँ सं0 2042 सं0
41. उद्धृत पृ0 812 उपाध्याय रामजी , पूर्ववर्णित।